RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-12
December -2018

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

जगदीश चन्द्र माथुर और रामसरूप अनखी के प्रमुख उपन्यासों में कृषक जीवन की त्रासदी

पायलदीप

अनुसंधानकर्ता, हिंदी विभाग, जे.एस. विश्वविद्यालय, शिकोहाबाद, उत्तरप्रदेश

साहित्य को समाज का दर्पण, मानवीय भावनाओं की अभिव्यक्ति व हमारे मनोभावों और अंतवर्गो को प्रदर्शत करने का साधन माना जाता है। मनुष्य जो कुछ भी अपने जीवन में देखता है, अनुभव करता है और जिसके बारे में सोचता है, वह सब कुछ साहित्य के रूप में हमारे सामने लाता है। साहित्य मानव-चेतना की अभिव्यक्ति है। चेतना अनुभूति की सघनता तथा चिन्तन की गहनता के समन्वित आधार पर स्वरूप ग्रहण करती है। इसी प्रकार साहित्य के अन्तर्गत विभिन्न साहित्यिक विधाओं के माध्यम से सामाजिक समस्याओं को सामने लाया जाता है। उपन्यास साहित्य की एक ऐसी सशक्त विद्या है, जिसके माध्यम से जन-साधरण के प्रत्येक दुख:सुख और अनुभवों को उभारा जाता है, आज हिन्दी उपन्यास की कथा-भूमि काफी विस्तृत और वैविध्यपूर्ण हो चुकी है। संवेदना के स्तर पर भी हिन्दी उपन्यास जीवन के अनेक अपरिचित स्तरों को प्रदर्शित करता हुआ संभावना के नये क्षितिज का द्वारा मुक्त कर रहा है।

उपन्यास अपने मूल में यथार्थवादी है, मावन जीवन के यथार्थ को अभिव्यक्त करने अर्थात्, अनेक प्रकार की समस्याओं, विडम्बंनाओ जैसे ग्रामीण जीवन के संघर्षो, इटते-रिश्ते, नारी जीवन और कृषक वर्ग की त्रासदी को सामने लाने में सफल सिद्ध हुआ है। इनमें से कृषक जीवन की समस्या दिन-प्रतिदिन भयंकर प्रतीत होती जा रही है। अनेक उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों के माध्यम से कृषकों के जीवन में आने वाले संकटों पर विचार किया है। वो भाषा पंजाब हो या हिन्दी उपन्यासकारों ने इस समस्या को प्रत्यक्ष रूप देकर कृषक-जीवन की अनुभूति को प्रदर्शत किया है।

भारत की अर्थव्यवस्था समाजव्यवस्था और धर्मव्यवस्था को बनाने में गांवों की भूमिका आज भी अधिक हैं। गांवों में रहने वाली शत-प्रतिशत आबादी कृषि-व्यवस्था पर आश्रित हैं। यद्यपि अधिकतर ग्रामीण कृषि-व्यवस्था पर ही आश्रित है, परंतु सभी को किसान नहीं कहा जा सकता भूमि से संबंधत रखने वाले ग्रामीण लोगों में कृषक(किसान) के अतिरिक्त जमीदार और मजदूर भी है, परंतु लक्ष्य कृषक ही है, जो भारत को कृषि- प्रधान देश बनाता है। भारत को कृषि प्रधान बनाने में जमीदारों की भूमिका साकारात्मक नहीं मानी जाती । वे जमीन के बड़े हिस्से के मालिक तो होते है, परंतु कृषि कार्य स्वयं नहीं करता। हल चलाना, बीज बोना, फसल काटना आदि जितने भी कृषि-कार्य हैं, उन्हें सम्पन्न करवाने के लिए जमींदार वर्ग मजदूर रखता है। मजदूर की स्थिति ऐसी है कि वे प्रात: भूमि-हीन होते है उनके मकानों का स्वामीत्व भी इनके पक्ष में नहीं होता है तथा मजदूर वर्ग की स्थिति डिवंबनात्मक है। जमींदार वर्ग के पास जमीन तो है परंतु वह कृषि कार्य स्वयं नहीं करता। मजदूर वर्ग जो कृषि-कार्य करता है तो जमीन का मालिक नहीं होता। इन दोनों वर्गो को किसान नहीं कहा जा सकता। कृषि-व्यवस्था का अंग होने के बाजवूद भी ये दोनों वर्ग किसान नहीं माने जाते। किसान वे है जो स्वयं कृषि-कार्य करते है, इन्हीं के बल पर भारत कृषि-प्रधान देश बना है। कृषि-व्यवस्था केवल अर्थव्यवस्था नहीं होती बल्कि एक सम्पूर्ण सभ्यता-संस्कृति होती है। जिसकी निर्मित कृषकों पर आश्रित होती है। संस्कृति को बनाने में सामाजिक बनावट की अहम भूमिका होती है। भारत की संस्कृति का मुख्य पक्ष कृषि संस्कृति है जिसे बनाने में किसान-समाज की भूमिका है।

हिन्दी उपन्यासकार जगदीश चन्द्र माथुर(1917-78ई.) और पंजाबी उपन्यासकार रामसरूप अनखी(1932-2010ई.) के उपन्यासों के माध्यम से कृषक जीवन की त्रासदी को उभारा गया है।

जगदीशचन्द्र माथुर:

ये उन साहित्याकारों में से हैं जिन्होंने आकशवानी में काम करते हुए हिन्दी की लोकप्रियता के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। रंगमंच के निर्माण, निर्देशन, अभिनय, संकेत आदि के संबंध में विशेष सफल रहे हैं। परिवर्तन और राष्ट्र निर्माण के एतिहासिक समय में आई सीएस, ऑल इंडिया रेडियो के डायरैक्टर जनरल रहें। 1971

RRIJM 2015, All Rights Reserved

से भारतीय सरकार के हिन्दी सलाहकार भी रहे। इन सरकारी नौकरियों में व्यस्त रहते भी भारतीय इतिहास और संस्कृति को वर्तन संदर्भ में व्याख्यापित करने का प्रयास करते रहे। माथुर जी ने उपन्यासों की रचना की।

इनके उपन्यासों मं से कुछ उपन्यासमें में से कुछ उपन्यास कृषक वर्ग की अभिव्यक्ति करने वाले है। इनके उपन्यासों में घासगोदाम(1985ई.) कभी भी न छोड़े खेत जमीन अपनी तो थी(2001ई). ऐसे उपन्यास है जो कृषक व ग्रामीण वर्ग की त्रासदी को प्रदर्शित करता है।

घासगोदाम(1985ई.)में दिल्ली के परिणाम स्वरूप अर्थात् दिल्ली के विस्तार परिणाम स्वरूप उसके आस-पास के किसानों का भूमि हीन होना तथा जीविका का दूसरे साधनों को जुटा पाने में अपने असमर्थता के कारण बनियों, धर्म के ठेकेदारों , राजनीति के नए व्यावासथियों के चुंगल में फंस कर मजदूर या अपराधी का जीवन व्यतीत करने के लिए बदा होना दिखाया गया है।

कभी न छोड़े खेत उपन्यास में भी सम्पन्न जाटों की समन्ती ठसक की कहानी कही गई हैं। सम्पन्न जाट परिवार छोटी-छोटी बातों को तूल देकर झूठी आन की रक्षा के लिए लड़ पड़ते हैं और इसका वायदा वकील, डॉक्टर, पुलिस तथा हकीम उठाते हैं। फिर भी उनकी ठसक पुश्तैनी शान के रूप में कायम रहती है।

जमीन अपनी तो थी उपन्यास में माथुर जी ने आज के मजदूरों के जीवन में होने वाले परिवर्तनों को गहराई से महसूस किया हैं। उपन्यास का केन्द्रीय पात्र काली उनकी अद्भुत सृष्टि हैं। वह स्वयं को मजदूरों का हित्त चिंतित हैं ही अपने बेटे के रूप में नई पीढ़ी को भी संघर्षशील बना दिया हैं। सब मिलाकर लेखक ने इस उपन्यास में मजदूरों में जाग्रति नई चेतना को एक सार्थिक परिनीति देने की कोशिश है।

इस प्रकार जगदीश चन्द्र माथुर निरंतर सामान्य जन के दुख दर्द को सामने रख कर आज के संदर्भ में उनके संघर्ष और जीजी विषय को पूरी सहानुभूति के साथ चिरित्र करते रहे हैं। इनके उपन्यास मार्कसवादी सिद्धांतों को कथा के ढांचे में फिट करने के लिए नहीं लिखे गए हैं। यह जीवन के यथार्थ को उसके अंत विरोधों के साथ सही संदर्भ में मूर्त करने के लिए प्रयत्न में रखे गए हैं, इस लिए इनके उपन्यास विशेष प्रभावित करने वाले हैं।

पंजाबी साहित्य क्षेत्र में राम सरूप अनखी(1932-2010) का काम नाम बहुत चिर्चित है। इन्होंने अपने सार्थिक खेती में कविता कहानी और उपान्यास तीनों सार्थिक रूपों को अपनी सृजना का आधार बनाया, परंतु जब समकालीन साहित्य और वर्तमान स्थितियों के संदर्भ में इनको देखते हैं तो यह उपन्यासकार के रूप में प्रसिद्ध हुए अनखी जी ने आधुनिक पंजाबी उपन्यास के क्षेत्र में गुणात्मक और गिणात्मक दोनों पक्ष से पंजाबी उपन्यास की परिधि को विशाल व समृद्ध बनाया, इन उपन्यासों में सबसे बड़ी शक्ति ग्रामीण जीवन का सार्थक और यथार्थ अनुभव हैं। ग्रामीण जीवन के अनेक यथार्थ आयामों को वह समकालीन परिवर्तित हो रही स्थितियों के संदर्भ में व्यक्त करता हैं। इनमें आत्म और अनात्म में संतुलन बनाकर उपन्यास रचना की गहरी समझ को कालत्मक पड़ाव पर देखा जा सकता है।

आधुनिक पंजाबी उपन्यासों से रामसरूप अनखी को एक आंचलिक उपन्यासकार के रूप में माना जाता है, इन्होंने मालवा क्षेत्र के विभिन्न पहलूओं के बड़े मार्सिक रूप से अपने उपन्यास में चित्रित किया है। इनके उपन्यासों का केन्द्रीय विषय मालवा क्षेत्र के ग्रामीण, कृषक यथार्थक वस्तुगत जुड़ाव के संदर्भ में समस्त प्रकरणों द्वारा अभिव्यक्त करना है। मालवा क्षेत्र की आंचलिका को इन्होंने न केवल स्थानक रंगों उघाडने के लिए कला के माध्यम के लिए प्रयोग किया अपितु इस आंचलिकता के आधार पर कृषकों को और ग्रामीण जीवन का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया। इस जीवन यथार्थ के बारे उसका ज्ञान गंभीरता और दार्शनिकता का प्रतीक सिद्ध होता है। अनखी मालवा क्षेत्र के गांव के होने के कारण ग्रामीण यथार्थ की विभिन्न सूक्ष्मताओं को अपने अनुभव के माध्यम से समझने में समर्थ है। इनमें ग्रामीण यथार्थ को देखने और समझने की अथाह इच्छा भरी हुई है। इनका समस्त अनुभव उपन्यास की रचना प्रक्रिया समय रूपांतरति करना चाहता है। इनकी प्रमुख रूचि अपने अनुभव, घटनाचक्र को समीप से देखना न और लोगों की शारीरिक अवश्यकताएं और मानसिक संतापों पर टिकी होती है।

आधुनिक काल सभ्यता-संस्कृति के परिवर्तन का काल है। न वैज्ञानिक व तकनीकी विकास, शिक्षा के प्रसार, उद्यौगिक क्रांति और उपभोगी सभ्यता ने परम्पारागत गांवों के सामाजिक और आर्थिक स्थितियों में महत्वपूर्ण बदलाव किया है, परंतु मालवा क्षेत्र के ग्रामीणों और कृषकों की स्थिति वैसी हो हैं, इसमे कोई परिवर्तन नहीं आया है। अपने उपन्यासों में अनखी जी ने कृषक वर्ग में आने वाले संकटों को बड़े ही मासिक रूप में प्रस्तुत किया है। कृषकों का दुखांत इनके उपन्यासों मे मालवा क्षेत्र के यथार्थक आयामों

RRIJM 2015, All Rights Reserved

की निशानदेही करता है। मालवा क्षेत्र के किसानों का रहन-सहन, बोल-चाल, आर्थिक स्थिति और बेतरताबी को अचेत स्तर पर चित्रित किया है।

अपने शोध प्रबंध के शोध-प्रारूप में अनखी के उपन्यासों कोठे खडक़ सिंह(1985), सुलगदी रात (1978), सलफास का अध्ययन किया जाएगा।

कोठे खडक़ सिंह उपन्यास अनखी की सुप्रसिद्ध रखना है। इस उपन्यास में पंजाब की कृषि के अतीत पचास वर्षों का इतिहास चित्रित किया गया है। लघू स्तर के किसानों का दुखांत करता है। इस परिपेक्ष में हम मालवा क्षेत्र के लोगों के व्यवहार, सामाजिक संबंध और ऐसे विविध आयामाओं को समझ सकते है। इस उपन्यास का प्रारम्भ ही छोटे कृषकों के वर्णन से हुआ है। गिंदर की पत्नी हरनामी अपनी सखी श्यामों के साथ मेले जाती है और रात को घर वापिस नहीं आती तो गिंदर की जगीरदारी मानसिकता पत्नी को मारने पीटने तक हो उठती है, गिंदर लघु स्तर की कृषि का प्रतिनिधि है, जो एक ओर तो जागीरदारी सभ्यता की जकड़ में फंसा हुआ है तो दूसरी ओर कठोर वस्तु-स्थिति कारण पत्नी को पीट नहीं सकता। अनखी ने लघु किसानी का दुखांत प्रस्तुत किया है, जिसमें पति-पत्नी के संबंध आर्थिकता पर टिके हुए है। उपन्यासकार के समर्थ रूप में मालवा क्षेत्र के कृषि के संकट को अपने इस उपन्यास मे उभारा है। मालवा क्षेत्र के कृषकों के जीवन को इन्हें बहुत निकटता से देखा है। इस क्षेत्र में गांवों के कृषक लोग किसी भी तरह उचित-अनुचित ढंग से जमीन प्राप्त करने की कोशिश करते हैं। इस स्थिति को कोठे खडक़ सिंह के संदर्भ में टिप्पणी करते हुए डॉ. रघुबीर दंड लिखते है:-

इस उपन्यास की विशेषता यह है कि मालवा क्षेत्र के ग्रामीण जीवन का विशेष तर कृषकों के जीवन का वास्तंविक दर्पण है। कृषक की जमीन के लिए भूख के इर्द-गिर्द घूमते सभी रिश्ते अर्थात् भाभी देवर के साथ रहने के लिए तैयार कि देवर की शादी न होने से जमीन विभाजित न हो सकें।

इस उपन्यास में अर्जुन के हरनामी के साथ शारीरिक संबंध है, लेकिन अर्जुन की भाभी बंतों डरती है कि कहीं अर्जुन हरनामी के विवाह न कर लें। इसलिए वह अपने देवर की 10 बीघे जमीन के लिए उसे अपने वश में करती हुई उससे शारीरिक संबंध बनाती है और इस बात को प्रीतम की मां अपनी पुत्र वधु को बंतों के बारे बताती है। इस तरह कोठे खडक़ ङ्क्षसह उपन्यास में आर्थिकता का यह संकट जमीन और स्त्री के सभ्यक मालवीय अवचेतन को उभारता है, जिसमें लोग स्त्री और जमीन की प्राप्ति के लिए कुछ भी कर सकते है। झंडा सिंह अभावग्रस्त व आर्थिक स्थिति के कमजोर व्यक्ति मल्लण सिंह का लाभ उठाते हुए उस की जमीन बटोरता है। गांवों में छोटे-छोट अभावग्रस्त कृषक है जो अपनी जमीन झंडा सिंह और उसके पुत्र हरदित्त के हाथ दे बैठते है। इसी प्रकार जिस यथार्थबाद की बात हम करते है, यह एक आलोचनात्मक यथार्थवाद है। इसका उद्देश्य पुंजी प्रधान समाज सेवी श्रेणी को नीचा दिखाना है। अनखी ने इस उपन्यास में इसे आलोचनात्मक यथार्थवाद को अपनाया है। उनकी विधि को आलोचनात्मक यथार्थवाद की विधि माना जा सकता है। उभरती प्रगतिवादी दृष्टि से ही वह अपनी समस्त गल्प समाग्री प्रस्तुत करना प्रतीत होता है। इन्होंने जो देखा, अनुभव किया उसी का चित्रण किया गया है। कोठे खडक़ सिंह उपन्यास के समस्त व्यवहार के बारे अनखी लिखते है।

जमीन ही कृषक की धुरी है। यही कृषक वर्ग का सर्वोत्तम आश्रय है। इस जमीन के कारण ही तो वह सरदार है। सभी जातियों का सिरताज शहनशाह सभी का शहनशाह।

रामसरूप अनखी द्वारा रचित उपन्यास सुलगादी रात(1978) भी ग्रामीण कृषक जन जीवन के में संबंधित एक महत्वपूर्ण रचना है। इसमें जमीन से उत्पन्न हुई समस्याएं और उनके कारणों की खोज की गई है। ग्रामीण कृषकों के जीवन में झगड़ों का प्रमुख कारण जमीन का मालिक होना बनता है। इस प्राप्त करने के लिए भाई-भाई शत्रू बन जाता है और प्रत्येक ढंग अपनाकर जमीन अपनी बाई जाती सुलगदी रात में केन्द्रीय पात्र गुरनाम के भूमिपति भूमिविहीन बनने और उसके उपरांत होने वाले महासंताप को चित्रित किया गया। उपन्यास की प्रमुख समस्या जमीन के बटवारे को लेकर उत्पन्न हुआ झगड़ा और उसके कारण है। उनखी ने इस अर्थक उत्पादन की प्रक्रिया द्वारा भूमिपति से भूमिविहीन बने व्यक्ति के संकटग्रस्त जीवन को समाज के समस्त प्रसंग में प्रस्तुत किया है कि किस प्रकार भूमि मालिक बनने के विषय को लेकर गांव में गुटबंदी होती है। हिंसा व हाया तक पहुंच जाती है। जमीन ग्रामीण जीवन की उपजीविका के लिए आर्थिक धुरी समझी जाती है। इसके समक्ष सभी रिश्ते-नाते क्षीण पड़ जाते है। इस उपन्यास में भी जमीन की मालिक बनने के लिए झगड़ा आरंभ होता है के कारण बन जाता है। उपन्यास में

RRIJM 2015, All Rights Reserved

बड़ा भाई हरनाम, अपने चाचा पाखर की जमीने को गलत ढंग से लूटता है। और अपने छोटे भाई से चोरी वसीयत करवा लेता है। इसी तरह व अपने चचेरी बनह गुरो और अपने भाई वरियाम को सम्पति हिस्सा दबा लेता है। इस कारण ही हरनाम और वरियाम के परिवरों के विनाश का आरंभ होता है। यह विनाश तक ही सीमित नहीं रहता, हाया का कारण बनता है, छोटे भाई से बड़े भाई की हत्या हो जाती है। गुरनाम जो उपन्यास का केन्द्रीय पात्र होने के कारण इन घटनाओं से बुरी तरह प्रभावित होता है। मानसिक पीड़ा भोगता हुआ अपने जीवन से असंतुष्ट और हालातों से लाचार होकर अपने मन के भीतर के शोर से लड़ रहा है और लाचारी भाव में होता है जैसे:

मुझे आज नींद नहीं आ रही, रजाई को अपने तन के चारों ओर लपेटकर, पांवों नीचे दबाकर चाल चल रही है।

इस कार प्रकार हरनाम और वरियाम एक दूसरे को नीचा दिखाने के लिए अपने सभी आर्थिक साधन दाव पर लगा देते है। हालात और भी अधिक बिगड़ जाते है, चार वर्ष तक मुकद्दमा चलता है, एक व्यक्ति की जान भी चली जाती है, परंतु वह जमीन भी किसी के काम नहीं आती है और वरियाम को बीस वर्ष का सजा हो जाती है। प्रो. रविंदर भ_ल जी ने इस उपन्यास का मूल्यांकन करते हुए लिखा है कि:-

यह उपन्यास अकेले आदमी की कथा है, जो भूमिपति से भूमिहीन होने का अच्छे घर से लेकर ऊजड़े घर तक का और सुखी दिनों से लेकर दुखी दिनों तक सुगंधी भ्ज्ञक्रे सांसों से लेकर हौंके हावां तक का सफर करता है। इस प्रकार सुलगदी रात विभिन्न अर्थशील अंकों की प्रस्तुति से ग्रामीण कृषक समाज के बीच रिश्तों का प्रसार, जमीन का प्रेम और इसके त्याग के संकल्प को बहुत ही प्रभाव शाली ढंग से चित्रित करता है। उपन्यास में त्रासदिक दृश्य चाहे गुरनाम से संबंधित हैं, परंतु कृषक समाज में प्रत्येक व्यक्ति का दुखांत है जो ऐसी घटनाएं और हालातों से प्रभावित है। आलोचनात्मक यथार्थवाद की विधि द्वारा लिखा यह प्रभावशाली उपन्यास है।

सलफास(2002) उपन्यास में भी अनखी जी के कृषकों की आर्थिक और मानसिक स्थिति का वर्णन किया है कि समाज में विविध परिवर्तनों के उपरांत भी कृषक वर्ग को मानसिकता परिवर्तित नहीं हुई है। इस उपन्यास में संता छीले की जमीन पर खेती हिस्से प लेकर करता है, परंतु जब संते को पता चलता है कि त्रिलोचन उसकी लडज्ञकी से संबंध रखता है तो वह इनको गोलियों देता है। इससे तो यही ज्ञात होता है कि कृषक जीवन निरन्तर विकास परिवर्तिन स्थिति में जमीन निरंतर धनवान किसानों के अधिकार में केन्द्रीकरन की ओर बढ़ रही है। इसकी पुष्टि सलफास उपन्यास में कौरे ब्राहमण और जस्सी सरपंच की आपस में वार्तालाप से होती है जब कौरा ब्राहमण कृषकों की वर्गों में विभाजित होने वाली स्थिति के बारे संकेत करता है।

कृषि की इस द्दन्द स्थिति पीछे दो कारण पंजाबी कार्यशील दिखाई देते है। एक तो यह कि लोग श्रम करने को तिलांलजि देने लगे है। वह कुछ कार्य अन्या प्रातों के लोगों से करवाते है। जैसे बिहारी लोगों का पंजाब आकर काम करना। किसानी हरी क्रांति के आने के मारण उत्पन्न हुई। नई तकनीक और श्रम करने वाले बिहार के मजदूरों के कारण कार्यमुक्त हुई है। अनखी के अनुसार किसानों का कार्यमुक्त अर्थात् दूसरों पर आश्रित हो जाना इन्हें नशे की ओर लेकर जा रहा है। यही नशे की लत एक दिन किसान की मृत्यु और परिवारिक विनाश का कारण बन ती है जिस प्रकार संता अपनी लडकी के विवाह के लिए शाहूकार से ऋण लेता है, उस राशि पर शाहूकार द्वारा अधिक ब्याज लगाने पर संता उस राशि को वापिस करने से असमर्थ अनुभव करता है, यही असमर्थ केवल उसके अपमान का कारण ही नहीं बनती अपितु वह मानवीय परम्पराओं को खोजता हुआ अंत में सलफास नामक दवाई खाकर मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। अपनी आर्थिक स्थिति अच्छी न होने पर कृषक अपनी मूल जरूरतों की पूर्ति के लिए ऋण लेते है, ब्याज की दर अधिक होने के कारण चुका नहीं सकते तो फिर अपनी जमीन भी गवा लेते है, चिंताग्रस्त होकर आत्म हत्या करते है। अंत में अपनी इज्जत, जमीन और जीवन से हाथ धो बैठते है, अनखी जी स्थानक ग्रामीण स्तर पर पंजाबी परम्पराओं से पहुंचे हुए समाजवादी समाज की स्थापना की और दिलचस्पी दिखाते प्रतीत होते है।

अत: कहा जा सकता है कि भारतीय संस्कृति व अर्थव्यवस्था का मूल आधार कृषक वर्ग ही है जो स्वतंत्रपूर्व भी आर्थिक स्थितियों को सुधारने के लिए संघर्ष करता दिखाई देता है और स्वतत्रोतर काल में कृषकों के जीवन में वहीं समस्याओं की क्षीण आर्थिक स्थिति दिखाई देती है। पंूजीपति लोग पूंजीहीन लोगों का शोषण करते आ रहे है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- जगदीशचन्द्र माथुर के तीन उपन्यास
  1. घासगोदाम(1985)
  2. कभी न छोड़े खेत(1976)
  3. जमीन अपनी तो थी(2001)
- राम सरूप अनखी के उपन्यास
  1. कोठे खडक़ सिंह(1985)
  2. सुलगदी रात(1978)
  3. सलफाम(2002)
- समाजवादी यथार्थवाद और हिन्दी कथा साहित्य(डॉ. प्रेमलता जैन)
- हिन्दी उपन्यास:सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया और स्वरूप(प्रभा वर्मा): क्लासीकल पब्लिशिंग कंपनी नई दिल्ली।
- प्रेमचंद कालीन उपन्यासों में ग्रामीण जीवन (डॉ. पारसनाथ सिंह): कैपिटल पब्लिशिंग, नई दिल्ली